

## पाठ 32 अध्याय 30 और 31

इस सप्ताह, गिनती अध्याय 30 में, हम प्रभु से प्रतिज्ञा और शपथ लेने के मामले को उठाते हैं। मेरा मानना है कि हर आस्तिक, यहूदी या गैर-यहूदी, ने अपने जीवन में कभी न कभी ईश्वर से कोई वादा किया होगा, कुछ लोग नियमित रूप से प्रतिज्ञा और शपथ लेते हैं और पूर्वी रूढ़िवादी ईसाई धर्म में प्रतिज्ञा करना पूजा का एक नियमित हिस्सा है। हिंदू धर्म से लेकर बहाई धर्म तक और यहूदी धर्म से लेकर इस्लाम तक और अन्य सभी धर्मों में, मैंने जितने भी धर्मों का अध्ययन और परीक्षण किया है, उनमें किसी महत्वपूर्ण चीज़ के बदले में अपने ईश्वर से वादे करने की कुछ अंतर्निहित समझ है। नास्तिक जो खुद को जीवन-धमकी वाली स्थितियों में पाते हैं, वे ऊपर की ओर देखते हैं और किसी भी आध्यात्मिक देवता से वादा करते हैं जो सुन रहा हो, बदले में बचाए जाने के लिए (बस अगर ईश्वर वास्तव में मौजूद हो)।

जब हम शादी करते हैं तो हम विवाह की शपथ लेते हैं, यहोवा के नाम का आह्वान करते हुए एक दूसरे से वादे करते हैं। जब हम किसी अदालत में गवाही देते हैं तो हम पूरी सच्चाई बताने की शपथ लेते हैं ("इसलिए परमेश्वर हमारी मदद करें") और बाइबल में ऐसे पुरुषों (और महिलाओं) की भरमार है जो परमेश्वर से प्रतिज्ञा करते हैं। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि ये प्रतिज्ञाएँ और शपथ पूरी तरह से वास्तविक और वैध थीं (वे अंधविश्वास नहीं थीं), और परमेश्वर को उम्मीद है कि ये प्रतिज्ञाएँ पूरी की जाएँगी। फिर भी, ऐसे नियम और विनियम और कानून हैं जो इस बात पर स्थापित हैं कि कौन प्रतिज्ञा और शपथ ले सकता है या लेनी चाहिए: किस तरह की परिस्थितियों में, कौन वैध रूप से प्रतिज्ञा को रद्द कर सकता है, और कभी-कभी परमेश्वर से वादे और सौदे करने की गंभीरता के कारण क्षण की गर्मी में प्रतिज्ञा करने के खिलाफ चेतावनी दी जाती है।

आइये गिनती अध्याय 30 पढ़ें।

### गिनती अध्याय 30 पूरा पढ़ें

इससे पहले कि हम इस अध्याय में बहुत गहराई से उतरें, मैं यह बताना चाहता हूँ कि बाइबल में शपथ और व्रत के बीच एक स्पष्ट अंतर है। शपथ लेने वाले पर शपथ एक दायित्व डालती है। परिभाषा के अनुसार व्रत एक सशर्त वादा है। यानी, अगर याकूब सुरक्षित घर लौटता है, अगर इस्त्राएल कनानियों पर विजयी होता है, अगर यिप्तह अम्मोनियों को हरा देता है, तो वे सौदे को पूरा करने के लिए कुछ पूर्व निर्धारित कार्रवाई के साथ जवाब देंगे।

शपथ दो तरह की होती हैं, एक जो वादा करती है और दूसरी जो किसी तरह का दावा करती है (जैसे यह दावा करना कि आपने उस ऊँट को नहीं चुराया है)। परिभाषा के अनुसार, वाचा एक वचनबद्ध शपथ है। इब्रानी में इस तरह की शपथ को **शेवुआत इस्सर** कहा जाता है।

शपथ आम तौर पर किसी न किसी देवता के नाम पर ली जाती है, इब्रानियों के मामले में यह निश्चित रूप से **YHWH** के नाम पर थी। इस प्रकार हम इब्रानी शब्द **निशबा 'बे— YHWH** का उपयोग देखेंगे,

जिसका अर्थ है, "यहोवा की शपथ"। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से शपथ ले रहा हो, लेकिन उस शपथ को पक्का करने के लिए वह परमेश्वर के नाम का आह्वान कर रहा हो।

लेकिन जब शपथ सीधे परमेश्वर को दी जाती है (शपथ जो एक व्यक्ति और परमेश्वर के बीच होती है), तो इब्रानी शब्द **निशबा 'ले—यहव्ह** है, जिसका अर्थ है, "यहोवा की शपथ"।

प्राचीन बाइबिल के समय के ये इब्रानी लोग हमसे अलग नहीं थे, अक्सर संकट के क्षणों में हम परमेश्वर से विनती करते हैं और उनसे प्रतिज्ञा करते हैं, अक्सर बिना सोचे समझे और जल्दबाजी में: "हे प्रभु, मैं हर सप्ताह चर्च (या आराधनालय) जाऊँगा", या "मैं वादा करता हूँ कि मैं फिर कभी अपशब्दों का प्रयोग नहीं करूँगा", या "मैं आपसे कभी भी कुछ नहीं माँगूँगा"। आपको शायद कुछ अजीबोगरीब बातें याद होंगी जो आपने सुनी होंगी या वास्तव में खुद कही होंगी।

समस्या यह है कि पद 3 में यह कहा गया है। यदि कोई व्यक्ति शपथ लेता है या व्रत लेता है तो उसे उसे नहीं तोड़ना चाहिए, उसे वह सब कुछ करना चाहिए जो उसने कहा है कि वह करेगा। ओह। मुझे लगता है कि कभी—कभी हम प्रभु से इतने सारे वादे करते हैं कि हमें याद ही नहीं रहता कि हमने क्या कहा था। समस्या यह है प्रभु के पास फोटोग्राफिक मेमोरी और एकदम सही स्मरण शक्ति है।

वास्तव में 3 कहता है कि "यदि कोई पुरुष" प्रतिज्ञा करता है, यह विशेष रूप से पुरुष को संदर्भित करता है क्योंकि पद 4 तब शुरू होता है "यदि कोई महिला" प्रतिज्ञा करती है। इसलिए तुरंत हम देखते हैं कि परमेश्वर एक महिला की प्रतिज्ञाओं को पुरुष की प्रतिज्ञाओं से अलग तरीके से देखते हैं। इससे पहले कि हम पुरुषों और महिलाओं की प्रतिज्ञाओं के बीच इस दिलचस्प (और मुझे यकीन है कि आप में से कुछ महिलाओं को थोड़ा असहज) अंतर के विवरण की जाँच करें, आइए देखें कि यह अंतर पहले स्थान पर क्यों मौजूद है।

वे सिद्धांत जिनसे व्रतों के बारे में कानून आते हैं, और कैसे प्रत्येक लिंग उन व्रतों के लिए बाध्य है या नहीं, वे पहले से ही तोरह में अच्छी तरह से स्थापित हैं और यह है कि जिस तरह एक बच्चे को अपने माता पिता के अधीन रहना होता है। और पुरुष को परमेश्वर के अधीन रहना होता है, उसी तरह एक पत्नी को अपने पति के अधीन रहना होता है। आधुनिक पश्चिमी महिला को थोड़ा कम परेशान करने वाले तरीके से कहें तो. एक पत्नी अपने पति के संरक्षण और अधिकार के अधीन होती है, ठीक उसी तरह जैसे एक पति परमेश्वर के संरक्षण और अधिकार के अधीन होता है। इसलिए गिनती 30 में स्थापित अध्यादेशों का विचार यह है कि न तो एक बच्चे और न ही एक पत्नी को मानक ईश्वर निर्धारित कर्तव्यों के अलावा या उसके स्थान पर ईश्वर के प्रति स्व-लगाए गए, स्व-निर्मित दावित्वों को प्रतिस्थापित करने की अनुमति यहोवा द्वारा दी जाती है। इसके अलावा एक बच्चा या पत्नी परमेश्वर से कोई व्रत नहीं ले सकता है, जिसका पालन माता-पिता या पति को इस तरह से प्रभावित करता है कि वह व्रत उनके लिए अपमानजनक हो।

यह जरूरी नहीं कि यह व्रत की प्रकृति या इरादे को दर्शाता हो: यानी, इसका मतलब यह नहीं है कि व्रत एक बुरी व्रत या एक गैर-जिम्मेदार व्रत हो सकता है जिसे संभवतः पूरा नहीं किया जा सकता। बल्कि, एक बच्चे या एक महिला की व्रतें उसके सांसारिक अधिकार के तहत पहले आती हैं, इससे पहले कि वे उसके स्वर्गीय अधिकार, यहोवा के लिए वैध मानी जाएँ।

अब जब हम तोरह में प्रतिज्ञा लेने के नियमों के बारे में गहराई से जानेंगे, खासकर महिलाओं के मामले में, तो ध्यान रखें कि नए नियम में प्रभु के प्रति प्रतिज्ञा और वादे जारी रहे और उन्हें पूरी तरह से स्वीकार्य, सामान्य और आम तौर पर एक अच्छी बात माना जाता था। सुसमाचार और पत्रियों में हम विश्वासियों (यहाँ तक कि प्रेरितों) के बारे में पढ़ेंगे जो जीवन के सामान्य क्रम के रूप में प्रतिज्ञा करते हैं।

हालाँकि, यीशु ने प्रतिज्ञा करने के नकारात्मक पक्ष के बारे में चेतावनी दी और कहा कि किसी व्यक्ति की अन्यथा वैध अपेक्षा को रद्द करने या टालने के लिए प्रतिज्ञा का उपयोग नहीं किया जा सकता है। यीशु ने विशेष रूप से प्रतिज्ञा लेने की इस प्रथा को संबोधित किया, जो एक व्यक्ति को अपने माता-पिता की उचित देखभाल से बचने की अनुमति देती थी, क्योंकि यह उनके युग में एक वास्तविक समस्या थी।

मत्ती 15:3 और उसने (यीशुआ ने) उनको उत्तर दिया, "और तुम अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? 4 "क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, 'अपने पिता और माता का आदर करना,' और, 'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला

जाए।' 5 "परन्तु तुम कहते हो, 'जो कोई अपने पिता या माता से कहे, 'जो कुछ भी मेरी ओर से तुम्हें सहायता मिल सकती थी, वह परमेश्वर को दिया गया है (एक प्रतिज्ञा),' 6 वह अपने पिता या अपनी माता का आदर न करे।' और इस प्रकार तुमने अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर के वचन को अमान्य कर दिया। 7 "हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में ठीक ही भविष्यवाणी की, 8 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। 9 'परन्तु ये व्यर्थ मेरी आराधना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"

यह एक उदाहरण मात्र है, जहाँ कोई व्यक्ति स्वार्थी रूप से या शास्त्रों की सच्चाई से पूरी तरह अनभिज्ञ होकर तोरह में ईश्वर द्वारा निर्धारित स्थायी जिम्मेदारी के रूप में पहले से ही निर्धारित कार्य करने के बजाय ईश्वर को कुछ देने की प्रतिज्ञा करता है। इस उदाहरण में यह था कि एक व्यक्ति ने कहा कि वह जो पैसा अपने माता-पिता की देखभाल के लिए इस्तेमाल करता, उसने उसे प्रभु को देने की प्रतिज्ञा की है। इसलिए, अफसोस, वह एक बेटे के रूप में उनकी देखभाल करने के अपने दायित्व को पूरा नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में, उसने अपनी वृद्ध माँ और पिता की देखभाल करने के बजाय पैसे को पुरोहिती को दे दिया और यीशु ने इस गलत मानसिकता को मुख्य रूप से मनुष्यों के सिद्धांतों की शिक्षाओं पर दोषी ठहराया, जिसे वह अक्सर "परंपरा" के रूप में संदर्भित करता है। समझें, यीशु क्या कह रहा था ओह, तुम कहते हो कि तुम पवित्र शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हो. और तुम दावा करते हो कि तुम वही कर रहे हो जो शास्त्र कहते हैं। लेकिन वास्तव में तुम ऐसा नहीं कर रहे हो। आप शायद वास्तव में यह भी नहीं जानते कि शास्त्र क्या कहते हैं क्योंकि आपने उन सिद्धांतों की एक सूची को स्वीकार करना चुना है जो मनुष्यों ने तुम्हें बताया है कि सत्य है, ऐसे सिद्धांत जो कभी-कभी अपने स्वार्थ के लिए होते हैं, बजाय इसके कि वचन वास्तव में जो कहता है. उसके अनुसार चलें। दोस्तों, क्योंकि यहूदी अपने सिद्धांतों को "परंपरा" कहने लगे हैं, इसलिए आमतौर पर यह माना जाता है कि यीशु केवल उन परंपराओं का उल्लेख कर रहे थे जो यहूदियों ने बनाई थीं, वास्तव में, वह सभी मानव निर्मित परंपराओं से बात कर रहे हैं और इसमें परंपराओं का विशाल भंडार शामिल है जिसे ईसाई "सिद्धांत" कहते हैं और, यीशुआ कहते हैं कि पवित्रशास्त्र पर सिद्धांतों को स्वीकार करने का परिणाम यह है कि "उनका दिल मुझसे बहुत दूर है"।

मूल रूप से अध्याय 30 जिस तरह से काम करता है वह यह है कि यह प्रतिज्ञा लेने के मुद्दे को 4 मामलों या 4 उदाहरणों में व्यवस्थित करता है। पुरुषों के बारे में निर्देश इन मामलों में से एक नहीं है। पुरुष के लिए (जिसका अर्थ है उत्तरदायित्व की आयु का पुरुष, न कि लड़का-बच्चा)

यह बहुत सीधा मामला है: प्रतिज्ञा करें और प्रतिज्ञा निभाएँ। ऐसा कोई रास्ता नहीं है जो पाप न बन जाए। किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिज्ञा लेने के लिए किसी और को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, और चाहे वह व्यक्ति कितनी भी विकट परिस्थिति में क्यों न हो, प्रभु द्वारा कोई आँख नहीं झपकाई जाती है और न ही दूसरी ओर देखा जाता है।

हे पुरुषों, यीशु ने इसे नहीं बदला। यीशु ने ऐसा बिलकुल भी नहीं कहा कि प्रतिज्ञाओं से संबंधित अध्यादेश समाप्त कर दिए गए हैं। उसने जो कहा वह यह था कि आप जो प्रतिज्ञा करते हैं उसमें बहुत सावधान रहें और बेहतर है कि आप बस हाँ, हाँ और ना, ना करें, और वचन में लंबे समय से स्थापित ईश्वर-सिद्धांतों का पालन करें बिना यह सोचे कि आप किसी तरह उन सिद्धांतों का पालन करने से बचने के लिए प्रतिज्ञा कर सकते हैं।

संभवतः यह बाइबल में किसी व्यक्ति द्वारा बिना सोचे-समझे की गई प्रतिज्ञा का सबसे विनाशकारी उदाहरण है।

न्यायियों की पुस्तक में यिप्तह की कहानी है। यिप्तह एक इस्राएली था, संभवतः गाद गोत्र का था क्योंकि उसका जन्म गिलाद नामक क्षेत्र में हुआ था। गिलाद को पहले गाद (इस्राएल की 12 गोत्रों में से एक) कहा जाता था और गाद 2 1/2 इब्रानी गोत्रों में से एक था, जिन्होंने उस भूमि से खुद को अलग करने का फैसला किया था जिसे यहोवा ने अपने लोगों, कनान के लिए अलग रखा था। न्यायियों के युग के दौरान गाद का क्षेत्र गिलाद कहलाता था, जो यर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर एक क्षेत्र में था जिसे आम तौर पर ट्रान्स-यर्डन कहा जाता था।

यिप्तह की कहानी की पृष्ठभूमि यह थी कि अम्मोन राष्ट्र गिलियड के साथ परेशानी पैदा कर रहा था, और गिलियड के लिए अम्मोन की सेनाओं के साथ युद्ध करना ज़रूरी था। लेकिन, उनके पास गिलियड के लोगों को जीत के लिए एकजुट करने के लिए आवश्यक सैन्य नेता की कमी थी। यिप्तह को कुछ साल पहले गिलियड से बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उसकी माँ एक वेश्या थी, और इसलिए यिप्तह को नाजायज माना जाता था। हालाँकि, यिप्तह एक भयंकर और प्रभावी योद्धा नेता के रूप में जाना जाता था और इसलिए गिलियड के प्रतिनिधि उसके पास गए और उसे गोत्र में बहाल करने के बदले में युद्ध में गिलियड का नेतृत्व करने के लिए वापस लौटने के लिए कहा, वह सहमत हो गया।

लेकिन, युद्ध में जाने से पहले, यिप्तह ने यहोवा के पास जाकर आने वाले युद्ध के लिए परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए एक प्रतिज्ञा की। यानी, अगर यहोवा यिप्तह को जीत दिलाएगा, तो वह बदले में कुछ खास करेगा: यह प्रतिज्ञा करने का सामान्य तरीका है।

## न्यायियों 11:29–40 पढ़ें

कल्पना कीजिए, इस व्यक्ति यिप्तह को इस बात का बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि यह उसकी इकलौती बेटा होगी जो संयोग से, उसके द्वारा प्रभु से की गई बलि की प्रतिज्ञा की वस्तु बन जाएगी, उसने इस लड़की की बलि दे दी। अब प्रभु किसी भी तरह से मानव बलि की निंदा या माँग नहीं करते या स्वीकार नहीं करते। फिर भी उनका आदेश इतना स्पष्ट है कि एक व्यक्ति जो प्रतिज्ञा करता है (चाहे वह कोई भी हो) उसे उस प्रतिज्ञा को पूरा करना चाहिए, यिप्तह को लगा कि उसके पास अपनी ही बेटा पर यह भयानक कृत्य करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जब एक तरफ़ मैंने सुना है कि कई ईसाई और यहूदी यह तर्क देने की कोशिश करते हैं कि यिप्तह की बेटा को परमेश्वर को होमबलि के रूप में नहीं चढ़ाया गया था (इस अप्रिय और घृणित कार्य से बचने के लिए, जो सतह पर, परमेश्वर की स्वीकृति को पूरा करता प्रतीत होता है), लेकिन पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट है कि न केवल यिप्तह ने ठीक वैसा ही किया जैसा उसने प्रतिज्ञा की थी, बल्कि इस घटना के लिए इस्राएल में दुखद स्मरणोत्सव का एक नियमित दिन भी स्थापित किया गया था।

यिप्तह ने अपने आस-पास के लोगों को जो कुछ भी दिखाया वह परमेश्वर के लिए एक बहुत ही पवित्र और उचित भेंट थी (कम से कम उस समय जब उसने प्रतिज्ञा की थी तो ऐसा ही लगा था)। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इसका परिणाम क्या होगा। लेकिन प्रतिज्ञा करने में यही समस्या है, वे खतरनाक हैं।

हमें सभी संभावित परिणामों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। मैं यह भी बताना चाहूँगा कि यिप्तह कोई दूसरा निर्णय ले सकता था। वह प्रभु के साथ अपनी प्रतिज्ञा को तोड़कर अपनी जल्दबाजी के लिए खुद ही पाप सह सकता था, है न? लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, ईश्वर के प्रति बहुत ही झूठे विश्वास में और जाहिर तौर पर यह भी नहीं समझते हुए कि प्रभु मानव बलि नहीं चाहते, यिप्तह ने अपने द्वारा स्थापित की गई प्रतिज्ञा की शर्तों को पूरा किया और अपने ही मासूम बच्चे को मार डाला।

इसलिए पुरुषों, सावधान रहें। हमारी प्रतिज्ञाओं में शक्ति होती है और उनके परिणाम होते हैं और एक बार जब वे हो जाती हैं तो केवल दो ही संभावित परिणाम होते हैं कि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें, चाहे अनजाने में कितना भी दर्दनाक क्यों न हो, या हम अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दें और फिर अपने पाप में जीएँ। यिप्तह ने शायद प्रभु से की गई अपनी प्रतिज्ञा पूरी की हो, लेकिन प्रभु इससे प्रसन्न नहीं होते।

हमारे पास गिनती 30 में व्रत लेने के 4 मामलों में से पहला मामला है. एक कुंवारी लड़की (जिसका अर्थ है अविवाहित लड़की), जो अभी भी घर पर रह रही थी इसका मतलब है कि वह अपने माता-पिता, विशेष रूप से अपने पिता के अधीन थी और नियम यह है कि यदि यह छोटी लड़की व्रत करती है, और उसके पिता को इसके बारे में पता चलता है, लेकिन वह कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है, तो व्रत मान्य होता है, चाहे व्रत कोई भी हो।

हालाँकि, अगर उसके पिता को उसकी प्रतिज्ञा के बारे में पता चलता है और वह इसे अस्वीकार कर देता है, तो प्रतिज्ञा रद्द हो जाती है। इसके अलावा, प्रभु उसकी अधूरी प्रतिज्ञा को पाप नहीं मानेंगे क्योंकि यह उसके पिता ही थे जिन्होंने उसे बताया था कि वह इसे पूरा नहीं कर सकती।

दूसरे शब्दों में, दो विपरीत गलतियों (जैसे कि कहा जाए) के मामले में, एक अनधिकृत या जल्दबाजी में व्रत लेना, और दूसरा उस व्रत को पूरा न करना, अपने पिता के अधिकार (एक ऐसा अधिकार जो एक आधारभूत ईश्वर-सिद्धांत है) के प्रति आज्ञाकारी होना बेहतर था, बजाय ईश्वर के प्रति उस व्रत को पूरा करने के जिससे लड़की के पिता असहमत थे और, वैसे, लड़की को पूरी तरह से पता होगा कि उसके पिता की पूर्व स्वीकृति के बिना यहोवा के प्रति व्रत करने का कोई अधिकार नहीं था।

पद 7 में शुरू होने वाला दूसरा मामला प्रस्तावित है, और यह पहले मामले पर आधारित है। यह एक अविवाहित लड़की का मामला है, जो घर पर रहते हुए भी एक व्रत लेती है, जिसके बारे में उसके पिता को पता चल जाता है, लेकिन वह उसे रद्द नहीं करता। इसलिए लड़की उस व्रत की शर्तों से बंधी हुई है।

हालाँकि, बाद में उसकी शादी हो जाती है, और उसके पति को इस व्रत के बारे में पता चलता है जो उनकी शादी से पहले लिया गया था; एक पूरी तरह से वैध और प्रभावी व्रत। अब उसके पास व्रत की शर्तों को पूरा करने या व्रत को रद्द करने का विकल्प है और, जैसे कि अगर लड़की के पिता ने व्रत को रद्द कर दिया होता और उसे पूरा न करने के लिए परमेश्वर जिम्मेदार नहीं ठहराते, तो यह उसके पति के लिए भी वैसा ही है: वह अपनी पत्नी के व्रतों से सहमत हो सकता है या उन्हें रद्द कर सकता है। क्यों? क्योंकि इस लड़की पर अधिकार, जो अब एक महिला है, उसके विवाह के समय उसके पिता से उसके पति को हस्तांतरित हो गया था।

पद 10 में तीसरा मामला शुरू होता है, एक महिला का मामला जो विधवा या तलाकशुदा है और व्रत रखती है और, चूँकि वह इस समय पिता या पति के अधीन नहीं है, इसलिए वह जो

भी व्रत लेती है वह मान्य होता है और कोई भी उसे रद्द नहीं कर सकता। संक्षेप में, तलाकशुदा या विधवा के इस मामले में, उसकी व्रत और उसके दायित्व की स्थिति एक पूर्ण विकसित पुरुष के समान है।

अंतिम मामला, चौथा, एक विवाहित महिला एक व्रत लेती है, उसके पति को इसके बारे में पता होता है, लेकिन वह चुप रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि उसकी व्रत कायम रहती है, और उसे इसे पूरा करने की जिम्मेदारी उसी पर होती है। लेकिन, समझिए, ऐसे व्रत भी होते हैं जो पूरे परिवार को प्रभावित कर सकती हैं और, अगर उसका पति अपनी पत्नी की ऐसी व्रत को बरकरार रखता है जो बहुत ही मूर्खतापूर्ण है, या शायद ईश्वर के सिद्धांतों के भी खिलाफ है, तो कम से कम कुछ जिम्मेदारी तो उसे उठानी ही होगी।

पद 14 हमें व्रतों के बारे में कुछ सामान्य निर्देश देता है, लेकिन वास्तव में, यह व्रत का एक अलग प्रकार है जिसकी चर्चा यहाँ की गई है। यह आत्म-त्याग का व्रत है, अर्थात्, यह एक व्रत है जिसमें शर्तें हैं कि महिला प्रभु द्वारा उसके अनुरोध को स्वीकार करने के बदले में खुद को कुछ त्याग देगी। हम शमूएल के मामले में इस तरह की एक व्रत देखते हैं, जब उसकी माँ ने परमेश्वर से कहा कि अगर प्रभु उसे गर्भवती होने की अनुमति देते हैं और अगर बच्चा बेटा होता है तो वह अपने बच्चे को अपने पास रखने से इनकार कर देगी अर्थात्, वह अपने बेटे के पूरे जीवन को प्रभु की सेवा में समर्पित कर देगी, और इस तरह खुद को उन सभी आवश्यक कर्तव्यों और सम्मानों से वंचित कर देगी जो एक बेटा आमतौर पर अपनी माँ को दे सकता है, जैसे कि बुढ़ापे में उसकी देखभाल करना।

आइए अध्याय 30 और व्रतों के मुद्दे (मुख्य रूप से महिलाओं और बच्चों से संबंधित) की इस चर्चा को दो प्रकार की व्रतों की जाँच के साथ समाप्त करें। आमतौर पर, इन दो अलग-अलग प्रकार की व्रतों को अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, लेकिन कभी-कभी उनका उस तरह से अनुवाद नहीं किया जाता है। एक प्रकार को इब्रानी में **नेडर** कहा जाता है। **नेडर** का अनुवाद "व्रत" के रूप में किया जाना चाहिए: इसका अर्थ है कुछ सकारात्मक करना जैसे किसी प्रकार की बलि देना।

दूसरे प्रकार को इस्सार कहा जाता है। **इस्सार** का बेहतर अनुवाद "प्रतिज्ञा" होगा। यह प्रतिज्ञा आम तौर पर उपवास या किसी प्रकार के संयम से जुड़ी होती है। यह एक प्रकार की प्रतिज्ञा है, उदाहरण के लिए, नाज़री व्रत (या प्रतिज्ञा) से जुड़ी है, जिसमें अंगूर से बने किसी भी

उत्पाद को पीने या खाने से परहेज़ करना, अपने बाल नहीं कटवाने और किसी शव को छूने से परहेज़ करना शामिल है, भले ही वह उनकी माँ या पिता ही क्यों न हो।

सभी प्रतिज्ञाओं और वचनों में एक बात आम है कि इन प्रतिज्ञाओं और वचनों को आरंभ करने के लिए शपथ ली जाती है, और परिभाषा के अनुसार शपथ में ईश्वर का नाम लिया जाता है। शपथ भी दो प्रकार की होती है: पहली प्रकार की शपथ वचनबद्धता होती है और दूसरी शपथ कथन की होती है। कथन प्रकार की शपथ वह होती है जो मुकदमे में अभियुक्त द्वारा ली जाती है; शपथ के तहत वह मामले के तथ्यों और इस प्रकार मामले में अपनी बेगुनाही का दावा करता है। वचनबद्ध प्रकार की शपथ कहती है कि शपथ लेने वाला व्यक्ति कुछ करने के लिए खुद पर दायित्व लेता है। एक वाचा, परिभाषा के अनुसार, वचनबद्ध शपथ होती है, इसमें एक या दो पक्ष कुछ करने का वादा करते हैं। यह हमारे लिए याद रखना महत्वपूर्ण है: क्योंकि प्रभु ने खुद को शपथ के उसी कानून के तहत रखना चुना है जिसके तहत उसने मनुष्यों को रखा है। उदाहरण के लिए, जब प्रभु ने अब्राहम और मूसा के साथ वाचाएँ कीं, तो यह कुछ करने का उनका वादा था। यह यहोवा था जो अपने नाम पर, कुछ करने के लिए शपथ ले रहा था।

परिभाषा के अनुसार, प्रतिज्ञाओं में शर्तें होती हैं। यिप्तह ने कहा कि यदि परमेश्वर उन्हें विजय दिलाएगा तो वह युद्ध से घर लौटने पर अपने तम्बू के द्वार से सबसे पहले बलिदान करेगा। याकूब ने कहा कि यदि परमेश्वर उसे सुरक्षित रूप से कनान वापस ले आएगा, तो प्रभु उसका परमेश्वर होगा और वह परमेश्वर के लिए एक पवित्र स्थान बनाएगा।

प्राचीन इस्राएल में प्रतिज्ञाएँ इतनी लोकप्रिय हो गई थीं कि प्रतिज्ञा को पूरा करने के बजाय, उसे पूरा करने की प्रणाली विकसित की गई थी। हम उस प्रतिज्ञा मुक्ति प्रणाली की मूल बातें लैव्यव्यवस्था 27 में देखते हैं, जहाँ यह मुख्य रूप से एक व्यक्ति को प्रभु की सेवा के लिए प्रतिज्ञा के रूप में दिए जाने के मामले से संबंधित है। दूसरे शब्दों में एक पिता कह सकता है कि अगर ऐसा होता है तो मैं अपने बेटे को प्रभु की सेवा के लिए समर्पित करूँगा। हालाँकि, कानून के अनुसार, प्रभु की पूर्ण कालिक सेवा लेवियों का एकमात्र प्रांत था। इसलिए, यदि कोई माता-पिता अपने बच्चे को प्रतिज्ञा के रूप में "प्रभु की सेवा" के लिए समर्पित करता है, या यदि कोई दास मालिक अपने किसी दास को "प्रभु की सेवा" के लिए समर्पित करता है, तो चूंकि प्रतिज्ञा के पूरा होने का कोई तरीका नहीं था, इसलिए उस व्यक्ति के लिए एक तरीका था जिसने प्रतिज्ञा की थी, एक निश्चित मूल्य पर उस प्रतिज्ञा को वापस भुनाने का। पैसे पुजारी को दिए जाते थे (जैसा कि सभी प्रतिज्ञा के पैसे थे), लेकिन यह और भी अधिक उचित था क्योंकि "प्रभु की सेवा की यह

प्रतिज्ञा केवल तम्बू और बाद में मंदिर में काम करके ही पूरी की जा सकती थी और, चूंकि यह प्रभु द्वारा लेवियों के लिए विशेष रूप से आरक्षित था (और जो कोई भी इसे करने का प्रयास करता था उसे मृत्यु दंड दिया जाता था), तो परिभाषा के अनुसार यह केवल प्रतिज्ञा करने वाले व्यक्ति की प्रतीकात्मक भेंट थी: एक ऐसी प्रतिज्ञा जो संभवतः पूरी नहीं हो सकती थी। इसलिए हमेशा से यह अपेक्षा की जाती थी कि प्रतिज्ञा करने वाला व्यक्ति मंदिर में कुछ पैसे अवश्य देगा।

प्रतिज्ञाओं और वचनों के बारे में यीशु के शब्दों को सुनते समय इसे याद रखें: क्योंकि यह चारों ओर था।

अधूरी प्रतिज्ञाओं (सामान्यतः उस व्यक्ति को जनता के सामने पवित्र या ईश्वरीय दिखाने के उद्देश्य से) की इस अपमानजनक पृष्ठभूमि के कारण उन्होंने प्रतिज्ञाओं और वचनों के विरुद्ध बात की, क्योंकि वे इसे सामान्यतः निरर्थक गतिविधि मानते थे, क्योंकि यद्यपि यह आराधक के लिए तुच्छ बात थी, परन्तु ईश्वर के लिए यह गंभीर मामला था।

आइये अध्याय 31 पर चलते हैं।

### गिनती अध्याय 31 पूरा पढ़ें

यह अध्याय यहोवा द्वारा इस्राएल को मिद्यान के विरुद्ध आदेशित पवित्र युद्ध से संबंधित है। मिद्यान के विरुद्ध युद्ध क्यों? यह मिद्यानियों की मोआब के प्रति निष्ठा के कारण था, और इसलिए उन्होंने इब्रानियों को मोआब के मुख्य देवता कमोश की मूर्ति पूजा में शामिल करने में भाग लिया।

कुछ मायनों में यह बालाक और बालाम की कहानी का ही विस्तार है, जिसके अनुसार मोआब के राजा बालाक ने बालाक नामक मेसोपोटामिया के जादूगर से कहा कि वह आकर इस्राएल पर आप लगाए ताकि मोआब (और उनके सहयोगी मिद्यान) मूसा और उसकी सेना के खिलाफ लड़ सकें और उन्हें युद्ध में हरा सकें। मोआब इस्राएल से क्यों लड़ना चाहता था? क्योंकि इस्राएल अपनी 3 मिलियन आबादी और 600,000 की सेना के साथ, केनेल में सबसे बड़ा कुत्ता होगा और इसलिए इस क्षेत्र में किसी भी अन्य लोगों के समूह पर हावी होने में सक्षम होगा। लगभग सभी राजाओं (राजा बालाम सहित) ने अपने क्षेत्र और प्रभाव का विस्तार करने के लक्ष्य के साथ सिंहासन ग्रहण किया। यदि इस्राएल उनके क्षेत्र में आया और बच गया, तो राजा बालाक क्षेत्रीय वर्चस्व की अपनी उम्मीदों को अलविदा कह सकता था।

यहोवा परमेश्वर ने बालाक की योजना में हस्तक्षेप किया, बालाम (और उसके गधे) से सीधा संपर्क किया, और बालाम ने स्वीकार किया कि, (क) भले ही वह इस्राएल को शाप दे, लेकिन

इसका कोई प्रभाव नहीं होगा क्योंकि जो कुछ यहोवा ने आशीर्वाद दिया है, उसे शाप नहीं दिया जा सकता है। और जो कुछ यहोवा ने शाप दिया है, उसे आशीर्वाद नहीं दिया जा सकता है, और ख) परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि बालाम ने कभी इस्राएल के दुश्मन, मोआब को मजबूत करने के लिए शाप देने का प्रयास किया, तो परमेश्वर बालाम को मार डालेगा। इसलिए, बालाम ने राजा बालाक से कहा कि वह इस्राएल को शाप नहीं देगा और न ही दे सकता है और इसलिए बिना वेतन के कर्कमिश वापस घर चला गया।

हालाँकि, बालाम और बालाक की कहानी के तुरंत बाद हमें पता चलता है कि इस्राएल मोआब के क्षेत्र में ही रहा और बालाम ने बालाक को सुझाव दिया कि मोआब इस्राएल में घुसपैठ कर सकता है और इस तरह मिद्यानी (और मोआबी) महिलाओं को इब्रानी पुरुषों को यौन रूप से लुभाने के लिए उन्हें कमजोर कर सकता है, और इस प्रक्रिया में इस्राएल को कमोश की पूजा करने के लिए राजी कर सकता है। यह काम कर गया और, परिणामस्वरूप यहोवा इस्राएल या उसकी मूर्तिपूजा पर एक विपत्ति लाया जिसने 24,000 यहूदियों को मार डाला। यह तभी समाप्त हुआ जब पीनहास नामक एक पुजारी ने एक इब्रानी व्यक्ति को मोआबी महिला के साथ संभोग करते हुए भाले से मारा (जब वे इस्राएल के शिविर के अंदर उसके तम्बू में थे), जिससे उन दोनों की मौत हो गई। प्रभु ने इस बात को इस्राएल द्वारा किए गए धर्मत्याग और मूर्तिपूजा के राष्ट्रीय पाप के लिए प्रायश्चित माना और इसलिए विपत्ति समाप्त हो गई।

लेकिन, जैसा कि बाइबल में अक्सर होता है, जब इस्राएल को किसी के द्वारा गुमराह किया जाता है, तो सबसे पहले इस्राएल को उसका अनुसरण करने के लिए दंडित किया जाता है और फिर उन लोगों के खिलाफ प्रतिशोध होता है जिन्होंने उसका नेतृत्व किया था। यही बात यहाँ मिद्यान के विरुद्ध गिनती 31 में घटित हो रही है।

अब, इससे पहले कि हम इस आयत का एक-एक करके अध्ययन करना शुरू करें, मुझे कुछ जानकारी जोड़ने दीजिए। इस कहानी को पढ़ने से ऐसा लगता है कि पूरा मिद्यान नष्ट हो गया, विलुप्त हो गया। इसके बाद घटना के समय "मिद्यान" का अस्तित्व नहीं होता। लेकिन, जैसे-जैसे हम अपने तोरह अध्ययन में आगे बढ़ते हैं, और बाइबल में भी आगे बढ़ते हैं, हमें मिद्यान के साथ अन्य मुठभेड़ें मिलेंगी; और पुरातत्व यह साबित करता है कि मिद्यान इस युग से बहुत दूर तक जीवित और स्वस्थ रहे। तो क्या हुआ?

खैर, इसका उत्तर यह है कि उस युग में मिद्यान काफी हद तक कनान जैसा था: कनान नाम का कोई संप्रभु राष्ट्र नहीं था। कनान सिर्फ एक सामान्य भौगोलिक क्षेत्र था जहाँ कई गोत्रों

निवास करती थीं जो नूह के पोते कनान को अपना पूर्वज मानती थीं (साथ ही कई अन्य संस्कृतियों जिनका कनान से कोई संबंध नहीं था)। मिद्यान (याद करें कि मिद्यान वह जगह थी जहाँ मूसा मिस्र से भागकर गया था, यहीं पर उसकी मुलाकात अपनी मिद्यान की पत्नी, तिज़पोरा से हुई थी और उसने उससे विवाह किया था और यहीं पर वह जलती हुई झाड़ी में ईश्वर से मिला था, और इसलिए मेरा दावा है कि मिद्यान वास्तव में माउंट सिनाई का स्थान था। मिद्यान की भूमि भी एक सामान्य भौगोलिक क्षेत्र थी, न कि परिभाषित सीमाओं वाला राष्ट्र। मिद्यान कई गोत्रों से बना था, सभी मिद्यान नामक एक व्यक्ति के पूर्वज थे, जो अब्राहम की दूसरी पत्नी, कतुरा का पुत्र था। इसलिए, मिद्यानवासी सेमाइट थे, अब्राहम के वंशज और इस्राएल के दूर के चचेरे भाई।

अरब प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग में कई मिद्यान गोत्रों और कुल फैले हुए थे, और उत्तर में मोआब तक और पश्चिम में एदोम और नेगेव तक फैले हुए थे। हमारी गिनती 31 की कहानी में मूसा और इब्रानियों ने केवल उन मिद्यानियों के कुलों को नष्ट किया जो मोआब के क्षेत्र में बस गए थे। हर गोत्र के सभी मिद्यानियों को नहीं। फिर भी, इस्राएल ने जो किया वह काफी महत्वपूर्ण था।

हमारी कहानी, पद 1 में, जाएगी। प्रभु द्वारा मूसा से यह कहने से शुरू होती है कि मिद्यान के साथ यह युद्ध उसके लिए अंतिम प्रमुख कार्य होगा क्योंकि, इसके तुरंत बाद, मूसा की मृत्यु हो जाएगी।

हम अगले सप्ताह अपना अध्ययन जारी रखेंगे।